❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

आर्य संदेश टीवी
www.AryaSandeshTV.com
आर्य समाज का 24 घण्टे चलने वाला टीवी चैनल

वर्ष 44, अंक 38 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 2 अगस्त, 2021 से रविवार 8 अगस्त, 2021
विक्रमी सम्वत् 2078 सृष्टि सम्वत् 1960853122
दयानन्दाब्द : 198 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

श्रावणी पर्व : कोविड नियमों का पालन करने हुए आयोजित करें कार्यक्रम

स्वतन्त्रता दिवस (15 अगस्त) ★ रक्षा बन्धन (22 अगस्त)★ हैदराबाद सत्याग्रह स्मृति (22 अगस्त)★ श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (30 अगस्त)

हमें अपने वेद प्रचार के कार्यक्रमों को सावधानी और सतर्कता के साथ मास्क, सेनीटाइजेशन और उचित दूरी का पालन करते हुए गति प्रदान करनी चाहिए। श्रावणी पर्व 2021 के अवसर पर वेद सप्ताह के कार्यक्रम आयोजित करने का प्रयास अवश्य करें, वेदों पर आधारित पुस्तकें स्वाध्याय के लिए वितरित करें, घर-परिवारों और आर्य समाजों में विशेष यज्ञों, सत्संगों के आयोजन करें, जो एक लंबे समय से मानव समाज में मुर्दनी छाई हुई है आर्य समाज के माध्यम से वैदिक विचारों द्वारा आशा, उत्साह, उमंग, उल्लास का वातावरण निर्मित करें।

- धर्मपाल आर्य, प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

बंधुओं, वर्ष 2021 में 22 अगस्त को श्रावणी पूर्णिमा रक्षाबंधन पर्व है। इसके उपरान्त 30 अगस्त को श्री कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व है। इन दोनों पर्वों के बीच की अवधि को श्रावणी पर्व अर्थात् वेद प्रचार सप्ताह के रूप में मनाएं।

आर्य समाज एक सेवाभावी संगठन है। कोरोना के 2020 और 2021 दोनों कठिन काल खंडों में आर्य समाज ने मानव सेवा का अनुपम इतिहास रचा है। इन दिनों में हमने जहां एक तरफ मानव सेवा के अनगिनत कार्य किए हैं वहीं दिल्ली की सभी आर्य समाजों और शिक्षण संस्थाओं ने भारत सरकार के अनुसार सार्वदेशिक सभा द्वारा पारित सभी दिशानिर्देशों का पालन किया है। इस बीच आर्य समाज ने कोई बडा सार्वजनिक आयोजन नहीं किया, आर्य समाजों में साप्ताहिक सत्संग भी आनलाइन ही आयोजित किए, दैनिक यज्ञों में भी पूरी सावधानी बरती गई। किंतु अब हमें अपने वेद प्रचार के कार्यक्रमों को सावधानी और सतर्कता के साथ मास्क, सेनीटाइजेशन और उचित दूरी का पालन करते हुए गति प्रदान करनी चाहिए। श्रावणी पर्व 2021 के अवसर पर वेद सप्ताह के कार्यक्रम आयोजित करने का प्रयास अवश्य करें, वेदों पर आधारित पुस्तकें स्वाध्याय के लिए वितरित करें, घर-परिवारों और आर्य समाजों में विशेष यज्ञों, सत्संगों के आयोजन करें, जो एक लंबे समय से मानव समाज में मुर्दनी छाई हुई है आर्य समाज के माध्यम से वैदिक विचारों द्वारा आशा, उत्साह, उमंग, उल्लास का वातावरण निर्मित करें।

श्रावणी पर्व की प्रेरणा

हमारी वैदिक संस्कृति, सभ्यता और संस्कारों में पर्वों का विशेष महत्व माना गया है। वस्तुत: पर्वों के पीछे निहित भावना को अगर ठीक से समझा जाए तो पर्व हमारे जीवन में उत्साह, उमंग और खुशियों का संचार करते हैं। क्योंकि जीवन की यात्रा ही कुछ ऐसी है कि यहां कदम कदम पर कोई-न-कोई, किसी- न-किसी प्रकार का अवरोध आ ही जाता है, और अकस्मात सामने आई समस्याओं के कारण मनुष्य का मन निराशा और अवसाद से भर जाता है । शायद इसके निवारण के लिए ही हमारे पूर्वजों ने समय-समय पर पर्व मनाने की परंपरा चलाई होगी? क्योंकि पर्वों की प्रेरणाएं व्यक्ति, परिवार, समाज, देश और दुनिया तक सकारात्मक प्रभाव डालती हैं। मनुष्य के मन-मस्तिष्क में छाई हुई नकारात्मकता, सकारात्मकता में बदल जाती है, और पर्वों से प्रेरणा प्राप्त करने वाले मनुष्य अपने जीवन में नित-निरन्तर उन्नति करता हुआ आगे-

- शेष पृष्ठ 7 पर

सार्वदेशिक सभा के निर्देशन में घर-घर जाकर किया जाएगा
हैदराबाद सत्याग्रहियों का सम्मान

आर्यजनों से जीवित सत्याग्रहियों के नाम एवं पते भेजने का अनुरोध

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से हैदराबाद सत्याग्रह में भाग लेने वाले समस्त जीवित सत्याग्रहियों को सम्मनित करने का निर्णय लिया गया है। यह सम्मान कार्यक्रम प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं के माध्यम उनके आवास पर ही जाकर किया जाएगा। इस हेतु समस्त आर्यजनों, आर्यसमाजों, आर्य प्रतिनिधि सभाओं से जीवित सत्याग्रहियों के नाम, पते एवं सम्पर्क सूत्र सार्वदेशिक सभा को भेजने का अनुरोध किया गया है। आपसे निवेदन कि यदि आपके सम्पर्क में या जान-पहचान में कोई ऐसे सत्याग्रही महानुभाव हों तो कृपया उनकी सूचना **'मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001'** के पते पर भिजवाने की कृपा करें।

- सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

सार्वदेशिक सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में रविवार 1 अगस्त को ऑनलाइन आयोजित हुआ

25वां आर्य परिवार विवाह योग्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन

परिचय सम्मेलन से प्राप्त हुए सार्थक परिणाम - धर्मपाल आर्य

1 अगस्त 2021, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में 25वां आर्य परिवार युवक-युवती परिचय सम्मेलन जूम ऐप द्वारा आनलाइन संपन्न हुआ। इस अवसर पर राष्ट्रीय संयोजक श्री अर्जुन देव चड्ढा जी, मुख्य अतिथि श्री धर्मपाल आर्य जी, विशिष्ट अतिथि श्री विनय आर्य जी, सहसंयोजक श्री सतीश चड्ढा जी, श्रीमती वीना आर्या जी, श्रीमती विभा आर्या जी, श्रीमती रश्मि वर्मा जी, डॉ. प्रतिभा नंद जी इत्यादि महानुभावों ने नेतृत्व किया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन से हुआ, गुरु विरजानंद संस्कृतकुलम के ब्रह्मचारियों ने गायत्री मंत्र और ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना का मंत्रोच्चार किया। कार्यक्रम की सफलता की सराहते के हुए राष्ट्रीय संयोजक श्री अर्जुन देव चड्ढा जी ने सभी अतिथि महानुभावों का धन्यवाद करते हुए सभी युवक-युवतियों को अपनी शुभकामनाएं दी और कहा कि इन विपरीत स्थितियों में भी विभिन्न प्रांतों से 69 आर्य परिवारों के बच्चों का भाग लेना अपने आपमें अत्यंत प्रसन्नता की बात है। सम्मेलन के मुख्य अतिथि श्री धर्मपाल आर्य जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि आर्य परिवारों को जोड़ने के लिए तथा वैदिक संस्कारों के प्रचार-प्रसार के लिए दिल्ली आर्य

- शेष पृष्ठ 7 पर

देववाणी-संस्कृत

मायावी की माया द्वारा ही उसका नाश

वेद-स्वाध्याय

मायाभिरिन्द्र मायिनं त्वं शुष्णमवातिरः।
विदुष्टे तस्य मेधिरास्तेषां श्रवांस्युत्तिर।। - ऋ० 1/11/7
ऋषिः जेता माधुच्छन्दसः।। देवता - इन्द्रः।। छन्दः विराडनुष्टुप्।।

शब्दार्थ - इन्द्र = हे परमेश्वर! **त्वम्** = तुम **मायिनम्** = मायावाले, बड़े कपटी **शुष्णम्** = शोषण करनेवाले राक्षस को **मायाभिः** = मायाओं द्वारा ही **अवातिरः** = नीचे कर देते हो, विनष्ट कर देते हो। **ते** = तुम्हारे **तस्य** = उस रहस्य को **मेधिराः** = मेधावाले ज्ञानी लोग ही **विदुः** = समझते हैं, तुम अब **तेषाम्** = उनके **श्रवांसि** = अन्नों को, सत्त्वों को, यशों को **उत्तिर** = ऊँचा कर दो, उनका उद्धार कर दो।

विनय-हे परमेश्वर! तेरे इस संसार में शुष्ण असुर भी उत्पन्न हुआ करता है। यह वह मनुष्य व मनुष्यसमूह होता है जो दूसरों के शोषण पर, चूसने पर, अपना निर्वाह करता है। यह बड़ा मायावी होता है। यह दूसरों के रक्त का शोषण बड़ी गहरी माया से, बड़े छल-कपट से करता है। यह ऐसे प्रबन्ध से काम करता है, ऐसा ढंग रचता है कि हमें अपना कुछ भी अनिष्ट होता हुआ पता नहीं लगता, किन्तु चुपके-चुपके हमारे सब सत्त्व, सब विद्या, सब सम्पत्ति का अपहरण होता चला जाता है। इसकी माया के अच्छी प्रकार फैल जाने पर तो यह अवस्था आ जाती है कि इस शुष्ण असुर के शिकार हुए लोग ऐसे मुग्ध हो जाते हैं कि वे स्वेच्छा से, प्रसन्नता से, अपने को चुसवाते, शोषित करवाते जाते हैं, परन्तु हे इन्द्र! तू इस मायावी महा-असुर को मायाओं द्वारा ही विनष्ट कर देता है। तेरा जगद्विधान इतना सच्चा और परिपूर्ण है कि इसमें माया की अपने-आप प्रतिक्रिया होती है, माया अपनी प्रतिद्वन्द्वी माया को पैदा कर अपना आत्मघात कर लेती है। चालें चलनेवाला आखिर अपनी चालों से ही मारा जाता है। तेरी सच्ची माया (प्रज्ञा) के सामने शुष्ण की झूठी माया विलीन हो जाती है, पर तेरे इस सृष्टि के रहस्य को, तेरे इस सामर्थ्य को, विरले मेधावाले ज्ञानीजन ही जानते हैं। शेष साधारण लोगों को तो जब इस भयंकर शोषण का पता लगता है तो वे घबरा उठते हैं और समझने लगते हैं कि इस संसार में कोई इन्द्र नहीं, परमेश्वर नहीं, कोई गरीबों की आह सुननेवाला नहीं, किन्तु ये 'मेधिर' लोग श्रद्धा-भरी आँखों से तेरी ओर देखते हुए अपना काम करते जाते हैं, पर हे इन्द्र! अब तो बहुत देर हो चुकी, शुष्ण राक्षस का उपद्रव पराकाष्टा को पहुँच चुका। पीड़ितों की सुधि तुम और कब लोगे? ये देखो, चुसते-चुसते अब यहाँ क्या बचा है? मेधावी लोग अब एकमात्र तुम्हारी ओर टकटकी लगाये देख रहे हैं। अब तो तुम छिनते जाते गरीबों के पेट के अन्नों का उद्धार कर दो, नष्ट होते जाते उनके सत्त्वों का रक्षण कर दो। शुष्ण की माया को छिन्न-भिन्न करके इससे ढके पड़े सज्जनों के यज्ञों को फिर सुप्रकट कर दो। प्रभो! अब तो हद हो चकी है। हे इन्द्र! तुम्हारा इन्द्रत्व और किस समय के लिए है?

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

इंटरनेट पर देश के खिलाड़ियों की जाति क्यों तलाश रहे हैं लोग

चाहे वाले गूगल पर पदक तालिका देख रहे है और हम कास्ट तालिका। जैसे ही पता चला कि टोक्यो ओलम्पिक में पुसरला वेंकट सिंधु यानी पीवी सिंधु ने ब्रॉन्ज मेडल जीत लिया तो अचानक गूगल पर टॉप सर्च में आ गया पी वी सिन्धु कास्ट। हम आपको बता दें कि गूगल पर कब-कौन से शब्द ढूंढे जा रहे हैं, इसकी जानकारी ट्रेंड गूगल कॉम से मिलती है। एक अगस्त को जैसे ही सिंधु ने पदक जीता वैसे ही पीवी सिंधु कास्ट पूरे दिन में सबसे ज्यादा ढूंढा जाने वाला कीवर्ड बन गया।

हालाँकि ट्विटर पर लोग उन गूगल सर्च करने वालों को खरी-खोटी सुना रहे हैं लेकिन बेशर्मी का लिहाफ ओढ़े इन जातीय कीटाणु तक पता नहीं उनकी आवाज पहुँच भी रही है या नहीं? सिंधु की जाति ढूंढने वालों में सबसे ज्यादा लोग आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, महाराष्ट्र, बिहार और गुजरात के हैं। इस कीवर्ड को पहली बार अगस्त 2016 में गूगल पर ढूंढा गया था। जब सिन्धु ने 20 अगस्त 2016 को रियो समर ओलम्पिक में जापान की नोजोमी ओकोहुरा को हराकर सिल्वर मेडल जीता था। इसके बाद से लगातार पूरे 5 साल से इक्का-दुक्का सिंधु की जाति ढूंढी जाती रही, लेकिन 1 अगस्त को इसमें 90 प्रतिशत की बढ़ोतरी हो गई।

ये पहली बार नहीं है इससे पहले जब असम के छोटे से गाँव गरीब किसान की बेटी हिमा दास ने बीस दिन के अन्दर पांच गोल्ड मेडल जीतकर देश का नाम गर्व से ऊंचा कर दिया था। हमने एक बार उनका वह वीडियो देखा, जब वह प्रतियोगिता जीतने के बाद रुककर, सांस लेने की बजाय भारतीय दर्शकों से हाथ से इशारा कर भारतीय गौरव का प्रतीक तिरंगा मांग रही थीं, ताकि वह उसे लहराकर इस देश की शान को और बढ़ा सके।

लेकिन वह राष्ट्रीय खुशी ज़्यादा देर ना टिक सकी बेशक उनके हाथों में तिरंगा था पर तभी एक जातीय कीटाणु का ट्वीट आया ये श्रीमान भाजपा से काँग्रेस में कूदने वाले जाने-माने नेता उदित राज थे। जिन्होंने अपने ट्वीट में लिखा था कि "हिमा दास के सरनेम में दास की जगह मिश्रा, तिवारी, शर्मा ये सब लगा होता, तो सरकारें करोड़ों रुपए दे देती और मीडिया पूरे दिन देश के सभी चैनलों में उनकी खबरें चलाते।"

ये ट्वीट उस दौरान किया गया जब हिमादास सभी चैनलों पर छाई हुई थी। हालांकि हिमा को लेकर यह नया तमाशा नहीं था इससे पहले भी जब उन्होंने विश्व अंडर-20 एथलेटिक्स चैंपियनशिप की 400 मीटर दौड़ स्पर्धा में पहला स्थान प्राप्त कर गोल्ड जीता था, तब भी सोशल मीडिया पर इसी गैंग द्वारा इसी तरह का जातीय प्रचार किया गया था। उनकी जाति से सम्बन्धित अनेक पोस्ट शेयर किए गए थे। कुछ इस तरह लिखा गया था कि "भारत का नाम पूरी दुनिया में रोशन करने वाली हिमा दास को भारत सरकार केवल 50,000 रुपये का इनाम देगी कौन कहता है जातिवाद नहीं होता। इस देश में अगर हिमा की जगह कोई सवर्ण जाति का खिलाड़ी होता तो पांच करोड़ की राशि और रहने को घर मिलता।" इसके अलावा पोस्ट के कैप्शन में पूछा गया है, 'हिमा दास एक दलित हैं इसीलिए देश की ब्राह्मण सरकार कुछ नहीं दे रही! क्या हम सब भाइयों को मिलकर हिमा बहन की मदद नहीं करनी चाहिए?'

जय भीम-जय मीम गैंग द्वारा ये अफवाह और झूठ तब फैलाया जा रहा था जब हिमादास की प्रतिभा पर भारत की बड़ी बड़ी कम्पनियाँ इनाम बरसा रही थी। हिमा दास के स्वर्ण पदक जीतने के बाद असम की सरकार ने उन्हें 50 लाख रुपये की राशि

.....जब हिमादास सभी चैनलों पर छाई हुई थी। हालांकि हिमा को लेकर यह नया तमाशा नहीं था इससे पहले भी जब उन्होंने विश्व अंडर-20 एथलेटिक्स चैंपियनशिप की 400 मीटर दौड़ स्पर्धा में पहला स्थान प्राप्त कर गोल्ड जीता था, तब भी सोशल मीडिया पर इसी गैंग द्वारा इसी तरह का जातीय प्रचार किया गया था। उनकी जाति से सम्बन्धित अनेक पोस्ट शेयर किए गए थे। कुछ इस तरह लिखा गया था कि "भारत का नाम पूरी दुनिया में रोशन करने वाली हिमा दास को भारत सरकार केवल 50,000 रुपये का इनाम देगी कौन कहता है जातिवाद नहीं होता। इस देश में अगर हिमा की जगह को सवर्ण जाति का खिलाड़ी होता तो पांच करोड़ की राशि और रहने को घर मिलता।" इसके अलावा पोस्ट के कैप्शन में पूछा गया है, 'हिमा दास एक दलित हैं इसीलिए देश की ब्राह्मण सरकार कुछ नहीं दे रही! क्या हम सब भाइयों को मिलकर हिमा बहन की मदद नहीं करनी चाहिए?'.....

देने का ऐलान किया। साथ ही उन्हें असम में खेलों का ब्रांड एंबेसेडर और असम पुलिस में डीएसपी पद दिए जाने का भी फ़ैसला किया गया। इसके अलावा कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री जी परमेश्वर ने हिमा दास के लिए दस लाख रुपये के इनाम का ऐलान किया। असम के पूर्व मुख्यमंत्री तरुण गोगोई ने भी अपने एक ट्रस्ट से एक लाख रुपये देने की घोषणा की। राज्य के पूर्व मंत्री गौतम रॉय ने एक लाख रूपये देने की बात कही है। असम एथलेटिक्स एसोसिएशन और असम ओलंपिक एसोसिएशन ने हिमा दास के लिए दो-दो लाख रुपये के इनाम की घोषणा की। वहीं, फ़िनलैंड में रह रहे भारतीयों ने भी हिमा के लिए एक लाख रुपये इकट्ठा किए।

जब जय भीम-जय मीम गैंग को यहाँ कुछ नहीं मिला तब अचानक एक तस्वीर जारी की गयी इस तस्वीर में हिमा दास पूर्व एथलीट पीटी उषा के साथ दिख रही थी। इसे लेकर लिखा गया, "मूल निवासी कोच है, मूल निवासी ही धावक है, आप समझ जाइए सफलता इनकी ईमानदारी की वजह से मिली है अन्यथा मनुवादी तो हर जगह चोर ठगी करते हैं।"

शायद इन्हें नहीं पता या जान बूझकर ऐसा करते है! क्योंकि पी. टी. उषा कभी हिमा की कोच नहीं रही हैं। गाइड भी जरूर किया और फ़िनलैंड में आयोजित चैंपियनशिप के दौरान वे भारत के कोचिग स्टाफ़ के सदस्य के रूप में ज़रूर गई थीं। लेकिन हिमा को तैयार करने का श्रेय उनके कोच निपोन दास को जाता है।

लेकिन बात सिर्फ इतनी नहीं है, इससे कहीं आगे भी है। क्योंकि बहुत से लोग सोच रहे होंगे कि ऐसा करने वाले कुछ जातीय कीड़े होंगे, अनपढ़ बेवकूफ होंगे। पर शायद ऐसा नहीं है! क्योंकि जिन लोगों ने ये किया वे गरीब, ग्रामीण लोग नहीं हैं, ऐसा

- शेष पृष्ठ 6 पर

अग्नियों के विभिन्न उपयोग

अग्नियों में दो क्रियायें हो सकती हैं। दहन और वाष्पन।

दहन एंव वाष्पन में अतंर - किसी भी ज्वलनशील सामग्री के वाष्पन एंव ज्वलन यानी जलने में बहुत अंतर होता है जो निम्न है -

1. वाष्पन के लिए हवा नहीं चाहिए अत: हवा प्रदूषित नहीं होती है जबकि दहन के लिए हवा चाहिए ही, अन्यथा दहन नहीं हो सकता है, अत: हवा प्रदूषित होती है। बगैर वायु प्रदूषण के दहन हो ही नहीं सकता है।

2. वाष्पन की क्रिया परिवर्तनीय होती है। यदि इन वाष्प को ठंडा कर जाय तो मूल पदार्थो के रसायनों को पुन: ठोस या तरल रूप में वापस प्राप्त हो जाता है, और ऐसा बार बार किया जा सकता है। ज्वलन यानी दहन की क्रिया अपरिवर्तनीय होती है। दहन होने के बाद मूल पदार्थों के रसायनों को पुन: ठोस या तरल रूप में वापस प्राप्त नहीं किया जा सकता है। जब किसी पदार्थ के मूल स्वरूप को नष्ट करना होता है तब उसे ज्वालाओं के साथ दहन कर देते हैं।

3. वाष्पन के लिए निम्न या मध्यम आँच यानी तापमान की अग्नि चाहिए जो कोयले, कंडे यानी उपले की अग्नि होती है, दहन के लिए उच्च आँच यानी उच्च तापमान की अग्नि चाहिए।

4. वाष्पन के फलस्व/प जो जो रसायनें हवा में फैलती हैं उनमे मूल पदार्थो के सुगंध, औषधीय आदि सभी गुण यथावत् ही रहते हैं। उनके रसायनों एंव गुणों में कुछ भी परिवर्तन नहीं होता है। ज्वलन यानी दहन में पदार्थ के समस्त रसायनें विलुप्त, समाप्त, परिवर्तित होकर 3 भागों में बंटकर (1) अधिकाशं रगंहीन, गंधहीन गैसें आदि (2)उर्जा, गर्मी जो लपलपाती हुई प्रकाशयुक्त ज्वालाएं होती हैं और बगैर प्रकाश के भी हो सकती है। (3) जल वाष्प के रूप में ही हवा में फैलती है।

5. पदार्थों के ज्वलन, दहन क्रिया एंव जीवधारियों, प्राणियों के श्वसन क्रिया में पूर्ण समानता है जबकि वाष्पन की क्रिया में बिल्कुल समानता नहीं है। दहन एंव प्राणियों के श्वसन क्रिया में इसलिए समानता है क्योंकि दोनों में हवा के आक्सीजन गैस की खपत होती है और प्रतिफल में दोनों से हवा को प्रदूषित करने वाली कार्बन डाईआक्साइड गैस आदि ही हवा में फैलती है।

6. दैनिक जीवन में दहन क्रियाओं को केवल उर्जा, गर्मी, प्रकाश, यांत्रिकी, भोजन पकाने आदि के लिए कराया जाता है जबकि वाष्पन पदार्थों के सुगंध, रसायनों को वायुरूप में परिवर्तित कर हवा में फैलाने को किया जाता है, जैसे मच्छर क्वायल, तरल रसायनों, अगरबत्ती, घूपबत्ती, फूलों के सेंट, इत्र बनाने के लिए किया जाता है। रोगों के निवारण करने के लिए, धूनी यानी वाष्पण चिकित्सा किया जाता है।

प्रत्यक्ष में विभिन्न अग्नियों के गुण एंव उपयोग- उपरोक्तानुसार अग्नियाँ 7 तरह की होती हैं परतुं हम अपने दैनिक कार्यों में प्राय: दो ही तरह के अग्नियों का उपयोग करते हैं।

पहली **"ज्वालायुक्त अग्नि"** जिसमें उपरोक्त 7 रगों अथवा कुछ रंगों की ज्वालाएं यानी लौ हवा में उठते रहते हैं। यह अग्नि उच्च तापमान यानी अत्यधिक

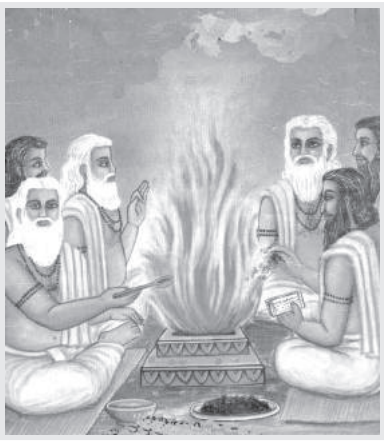

.....अग्नि में यह विशेषता होती है कि जो जैसा पदार्थ डालते हैं वह गर्म होकर मूल रसायनों के मूल गुणों के साथ ही हवा में फैलता है परतुं शक्तियां हजारों लाखों गुना बढ़ जाती हैं। लाल मिर्च डालो तो इसी की तीक्ष्णता हजारों गुना बढ़कर ही हवा में फैलता हैं। शुद्ध घृत डालो तो इसी की सुगंध हजारों गुना बढ़कर हवा में फैलेगा। इस अग्नि में कोई भी सुगंधित, दुर्गंधित, तीक्ष्ण, मिष्ठ, लालमिर्च, कोई भी कपड़ा, जड़ी बूटियाँ, जहर, अमृत आदि कुछ भी पदार्थ अर्थात कुछ भी डालो, तो उन्हीं मूल गुणों के साथ हजारों गुना बढ़कर ही हवा में फैलता है।.....

आँच की उग्र, प्रचंड, विध्वसंक, दहन करने वाली होती है। इस "ज्वालायुक्त अग्नि" का अध्ययन करने पर हम देखते हैं कि इस अग्नि में कोई भी सुगंधित, दुर्गंधित, तीक्ष्ण, मिष्ठ, लालमिर्च, कोई भी कपड़ा, जड़ी बूटियाँ, जहर, अमृत आदि कुछ भी ज्वलनशील पदार्थ अर्थात कुछ भी डालो, यह सब को छिन्न भिन्न, समस्त गुणों, शक्तियों का विध्वशं कर यानी समस्त गुणों को समाप्त कर केवल रगंहीन, गंधहीन गैसें, उष्मा और थोड़ा जल वाष्प के रूप में परिवर्तित कर देती है।

दूसरी अग्नि **"ज्वाला रहित अग्नि"** मध्यम एंव निम्न तापमान यानी आँच की शांत अग्नि होती है जो बगैर ज्वालाओं के साथ जलती है, जैसे कोयला, कंडा की अग्नि, जिसमें ज्वाला बिलकुल हवा में नहीं उठती है। इस अग्नि में डाले गये पदार्थों के रसायनों का दहन नहीं होता है, बल्कि मात्र गर्म होकर उनके भाप यानी वाष्प वायुरूप में रुपातंरित होकर समस्त मूल गुण एंव शक्तियां हजारों गुना बढ़कर हवा में फैलने लगते हैं। जो हमें सघन होने पर कुछ ही उँचाई, कुछ ही दूरी तक धुआँ के रूप में आँखो से दिखाई पड़ते हैं। हवा में विलीन होते ही आँखों से नहीं दिखाई देते जैसे जल में शक्कर डालने एंव चम्मच से चलाने पर शक्कर जल में धीरे-धीरे विलीन हो जाता है। इस अग्नि में यह विशेषता होती है कि जो जैसा पदार्थ डालते हैं वह गर्म होकर मूल रसायनों के मूल गुणों के साथ ही हवा में फैलता है परतुं शक्तियां हजारों लाखों गुना बढ़ जाती हैं। लाल मिर्च डालो तो इसी की तीक्ष्णता हजारों गुना बढ़कर ही हवा में फैलता हैं। शुद्ध घृत डालो तो इसी की सुगंध हजारों गुना बढ़कर हवा में फैलेगा। इस अग्नि में कोई भी सुगंधित, दुर्गंधित, तीक्ष्ण, मिष्ठ, लालमिर्च, कोई भी कपड़ा, जड़ी बूटियाँ, जहर, अमृत आदि कुछ भी पदार्थ अर्थात कुछ भी डालो, तो उन्ही मूल गुणों के साथ हजारो गुना बढ़कर ही हवा में फैलता है।

तीसरी - दिन प्रतिदिन के जीवन में अग्नियों का उपयोग:- सृष्टि के प्रारभं से हम समस्त मनुष्यगण अपने दैनिक जीवन में विभिन्न रूपों एंव तीव्रता यानी उष्णता की अग्नियों का उपयोग करते रहे हैं जिनके उदाहरण निम्न है:-

(अ) घर आदि में मक्खी मच्छरों को भगाने एंव दूर रखने को विभिन्न क्वायलों को सुलगाकर धुआँ करते हैं। हवा में सुगंधियों को फैलाने के लिए अगरबत्ती, धूपबत्ती आदि सुलगाते हैं। जब जानवरों के कमरे में बहुत मक्खी मच्छर हो जाते हैं तब नीम आदि के सूखे पत्तों को कोयला या कंडा अग्नि में डाल कर धुआँ करते हैं।

(ब) आज से 50-60 वर्ष पूर्व जब भारत के अधिकांश नगरों और गांवों में बिजली और रसोई घर के गैस की सिलेण्डर की आपूर्ति नहीं थी। उस समय प्रकाश के लिए घरों आदि में लालटेन, पेट्रोमैक्स, ढ़िबरी, दियों में मिट्टी का तेल जलाया जाता था। भोजन पकाने के लिए घरों में लकड़ी के चूल्हे जलाए जाते थे। अब अधिकांश पावर हाउसों में भूमि से निकले हुए कोयला जिसे पत्थर का कोयला कहते हैं, को जलाकर, जल को गर्म करके भाप बनाकर, डायनमों मशीनों को चलाकर बिजली बनाया जाता है जिसे तारों द्वारा घरों में आदि में आपूर्ति कर बल्ब, ट्यूब लाइट आदि को जलाकर प्रकाश किया जाता है। हीटर आदि से भोजन पकाया जाता है। ऐसे ही बिजली से कई कई कार्य संपन्न किए जाते हैं।

आप यह ध्यान दीजिए कि एक सामान्य रोटी बनाने के लिए कितने लोगों को क्या-क्या सावधानियों का पालन एवं ध्यान करना पड़ता है। सबसे पहले गेहूं ठीक एवं सूखा होना चाहिए। सड़ा हुआ, मिट्टी गंदगी आदि मिला हुआ न हो। जब गेहूं ठीक हो तभी उसको चक्की में इस तरह से पीसने में ध्यान दिया जाता है कि वह बहुत बारीक ना हो और ना बहुत मोटा हो। अब इसके बाद में उसका आंटा बनाने में जल न अधिक हो, और न कम हो। उसको समुचित समय के लिए गूंथा जाए जिससे आटा से उपयुक्त बढ़िया स्वादिष्ट रोटियां बने। अब इसके बाद में तवा ना बहुत भारी हो और ना बहुत हल्का हो। अब बेलने में रोटी को इस प्रकार बेला जाए कि उसकी गोलाई एवं मोटाई निर्धारित होनी चाहिए। फिर उसको पकाने में कितना ध्यान दिया जाता है। अग्नि की आंच पकाने व सेंकने में भी अलग-अलग होती है, न बहुत ज्यादा हो और न बहुत कम हो। तब जाकर एक अच्छी रोटी खाने को मिलती है। इस कड़ी में कहीं एक भी चूक हो जाए तो कल्पना करें कि वह रोटी कैसे बनेगी, खाने वाले को स्वादिष्ट लगेगी या नहीं। ऐसे ही विभिन्न व्यजंनो को पकाने, बनाने जैसे चावल, दाल, बघार, मसालों को भूनने, दूध उबालने आदि आदि में विभिन्न उष्णता यानी तापमान की अग्नियों का निर्धारित समय के लिए उपयोग करते हैं जो व्यंजन पकाने वाले को अपने अनुभव से ज्ञान होता है।

हम अपने दिन प्रतिदिन के कार्यों के अनुभव से यह जानते हैं कि किस कार्य विशेषकर रसोईघर में व्यंजनों के बनाने के लिए कितनी अग्नि और किस रूप यानी कितने तापमान की अग्नि चाहिए। यदि अग्नि कम हो जाए या ज्यादा हो जाए तो हमारा कार्य समुचित रूप से संपन्न नहीं होगा। उदाहरण में यदि घर में 3 लीटर के प्रेशर कुकर है तो उसको गैस के सबसे छोटे बर्नर के अधिकतम ज्वाला पर यानी अधिकतम आंच पर रखते हैं। जैसे ही सीटी बजती है तैसे ही बर्नर की ज्वाला यानी लौ को सबसे कम कर यानी आंच को न्यूनतम पर कर देते हैं। फिर वह निर्धारित समय तक यथावत रखना होता है जिससे व्यंजन ठीक से पक जाये। यदि कई लोगों का ज्यादा भोजन बनना होता है तब हम बड़ा प्रेशर कुकर 5 लीटर का लेते हैं और उसको चूल्हे के सबसे बड़े बर्नर पर रखते हैं। उसे भी सीटी बजते ही आंच को न्यूनतम कर देते हैं, अन्यथा बहुत जल्दी-जल्दी सीटी बजेगी और उसमें गैस की बर्बादी होगी। इसी प्रकार अन्य व्यंजनों को बनाने में उचित बर्नर और उचित आंच आवश्यक है और उसका भी उपयोग निर्धारित समय के लिए करना होता है। जिसको हम अपने अनुभव से अथवा किसी पुस्तक या अन्य माध्यम से ज्ञान प्राप्त करते हैं। सर्राफ जानते हैं कि किस गहने के किस भाग के बनाने व उनको जोड़ने के लिए किस प्रकार की, कितनी आंच कितने समय के लिए देना है।

इस प्रकार हमें अग्नि के व्यापकता एंव उपयोगिता का स्मरण और ध्यान कर जीवन में उपयोग करना है जिससे वांछित भौतिक एंव आध्यात्मिक लाभ ही लाभ हो और किसी को किसी प्रकार की हानि न हो। इसे पूजनीय, अलौकिक, रहस्यमयी, दिव्य देवी, कल्पनीय नहीं मानना चाहिए।

अत: विद्वानों से निवेदन है कि इस लेखनी पर अपनी शंका राय, टिप्पणी अथवा जो जो त्रुटियाँ ज्ञान में आये, उसे अवष्य ही पत्र, ईमेंल, मोबाइल/व्हाट्सअप मेसेज आदि से लिखने का कष्ट करें जिससे मैं इस लेखनी को अधिक जन उपयोगी बना सकूं और मैं उसका उत्तर, निराकरण भेजूगां।

- वेद प्रकाश गुप्ता,
मोबा/व्हाट्सअप-9451734531,
Email - vedpragupta@gmail.com

आर्यसमाज की महान विभूति आचार्य भवभूति जी की श्रद्धांजलि सभा सम्पन्न

परिवार के सहयोग हेतु सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने प्रदान की चार लाख रुपये की राशि

आर्य समाज की महान विभूति आचार्य भवभूति जी के 27 जून 2021 को सड़क दुर्घटना में हुए आकस्मिक निधन से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा और पूरे आर्य जगत को गहरा आघात पहुंचा है। इस दुर्घटना में उनकी धर्मपत्नी एवं बच्चे भी गंभीर रूप से घायल हो गए थे। जिनका अभी भी उपचार चल रहा है। श्री भवभूति जी ने आर्य समाज के प्रचार-प्रसार और विस्तार में अहम् भूमिका का निर्वहन करते हुए पूर्व समय में दिल्ली के पहाड़गंज में गुरुकुल का कुशल संचालन किया एवं वर्तमान में वें तेलंगाना में बटुक विकास केन्द्र गुरुकुल आलियाबाद के संस्थापक के रूप में कार्यरत्त थे। आपने अपने पुत्रों तथा बटुक बालकों में किसी प्रकार का भेदभाव कभी नहीं किया। मानव निर्माण के कार्य में आप नित-निरन्तर कीर्तिमान स्थापित कर रहे थे। आपका अकस्मात इस तरह चला जाना आर्य समाज की अपूर्णीय क्षति है। आचार्य भवभूति जी का अन्तिम संस्कार 29 जून 2021 को सायं काल आर्यजगत के महान आचार्यों, कार्यकर्त्ताओं एवं परिवार तथा गुरुकुल परिवार के सदस्यों, बटुक और कन्याओं की उपस्थिति में आर्ष कन्या गुरुकुल आलियाबाद, तेलंगाना में पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ।

आचार्य जी की श्रद्धांजलि सभा का आयोजन आर्ष कन्या गुरुकुल, आर्ष शोध संस्थान आलियाबाद, तेलंगाना के प्रांगण में हुआ। जिसके आर्य संदेश टीवी चैनल के माध्यम से लाइव प्रसारण के जुड़कर हजारों लोगों ने अपने श्रद्धा सुमन अचार्य भवभूति जी को अर्पण किए। सर्वप्रथम यज्ञ किया गया जिसमें गुरुकुल की आचार्याएं, कन्याएं और अनेक विद्वान, कार्यकर्त्ता, सदस्य और आर्य नेता उपस्थित थे।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमंत्री श्री विनय आर्य जी ने सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचंद्र आर्य जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी एवं समस्त आर्यसमाजों और शिक्षण संस्थाओं की ओर से आचार्य भवभूति जी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि आचार्य जी का अकस्मात इस तरह चले जाना हम सब के लिए अत्यंत दुखद घटना है। लेकिन ईश्वर की व्यवस्था के सामने हम सब नतमस्तक हैं। आचार्य जी के अधूरे कार्यों को पूरा करने की हम सबकी जिम्मेदारी है। हम इस अवसर पर आचार्य जी के परिवार के उत्तम स्वास्थ की कामना करते हैं और साथ ही आचार्य जी की महान दिवंगत पुण्य आत्मा को शांति, सद्गति की प्राप्ति हो ईश्वर से यही हमारी प्रार्थना है। सभा की ओर से श्री विनय आर्य जी ने 4 लाख की सहयोग राशि गुरुकुल को प्रदान करते हुए कहा कि हम हमेशा गुरुकुल के कार्यों को आगे बढ़ाने में सक्रिय रहेंगे।

हिन्दी बोलकर देखिए - अच्छा लगेगा

ये उर्दू के वे शब्द हैं जो आप और हम प्रतिदिन प्रयोग करते हैं। इन शब्दों को त्याग कर एक कोशिश राष्ट्रभाषा के शब्दों का प्रयोग करने की

	उर्दू		हिन्दी
1	ईमानदार	–	सत्यनिष्ठ, सत्य परायण
2	इंतजार	–	प्रतीक्षा
3	इत्तेफाक	–	संयोग
4	सिर्फ	–	केवल, मात्र
5	शहीद	–	बलिदान
6	यकीन	–	विश्वास, भरोसा
7	इस्तकबाल	–	स्वागत
8	इस्तेमाल	–	उपयोग, प्रयोग
9	किताब	–	पुस्तक
10	मुल्क	–	देश
11	कर्ज	–	ऋण
12	तारीफ	–	प्रशंसा
13	तारीख	–	दिनांक, तिथि
14	इल्जाम	–	आरोप
15	गुनाह	–	अपराध
16	शुक्रिया	–	धन्यवाद, आभार
17	सलाम	–	नमस्कार, प्रणाम
18	मशहूर	–	प्रसिद्ध
19	अगर	–	यदि
20	ऐतराज	–	आपत्ति
21	सियासत	–	राजनीति
22	इंतकाम	–	प्रतिशोध
23	इज्जत	–	मान, प्रतिष्ठा
24	इलाका	–	क्षेत्र
25	एहसान	–	आभार, उपकार
26	अहसानफरामोश	–	कृतघ्न
27	मसला	–	समस्या
28	इश्तेहार	–	विज्ञापन
29	इम्तेहान	–	परीक्षा
30	कुबूल	–	स्वीकार
31	मजबूर	–	विवश
32	मंजूरी	–	स्वीकृति
33	इंतकाल	–	मृत्यु, निधन
34	बेइज्जती	–	तिरस्कार
35	दस्तखत	–	हस्ताक्षर
36	हैरानी	–	आश्चर्य
37	कोशिश	–	प्रयास, चेष्टा
38	किस्मत	–	भाग्य
39	फैसला	–	निर्णय
40	हक	–	अधिकार
41	मुमकिन	–	संभव
42	फर्ज	–	कर्त्तव्य
43	उम्र	–	आयु
44	साल	–	वर्ष
45	शर्म	–	लज्जा
46	सवाल	–	प्रश्न
47	जवाब	–	उत्तर
48	जिम्मेदार	–	उत्तरदायी
49	फतह	–	विजय
50	धोखा	–	छल
51	काबिल	–	योग्य
52	करीब	–	समीप, निकट
53	जिंदगी	–	जीवन
54	हकीकत	–	सत्य
55	झूठ	–	मिथ्या, असत्य
56	जल्दी	–	शीघ्र
57	इनाम	–	पुरस्कार
58	तोहफा	–	उपहार
59	इलाज	–	उपचार
60	हुक्म	–	आदेश
61	शक	–	संदेह
62	ख्वाब	–	स्वप्न
63	तब्दील	–	परिवर्तित
64	कसूर	–	दोष
65	बेकसूर	–	निर्दोष
66	कामयाब	–	सफल
67	गुलाम	–	दास
68	जन्नत	–	स्वर्ग
69	जहन्नुम	–	नर्क
70	खौफ	–	डर
71	जश्न	–	उत्सव
72	मुबारक	–	बधाई,शुभेच्छा
73	लिहाजा	–	इसलिए
74	निकाह	–	विवाह/शादि
75	बेहद	–	असीम
76	तहत	–	अनुसार
77	हकीम	–	वैध
78	नवाब	–	राजासाहब
79	रुह	–	आत्मा
80	खुदकुशी	–	आत्महत्या
81	इजहार	–	प्रस्ताव
82	बादशाह	–	राजा/महाराजा
83	ख्वाहिश	–	महत्वाकांक्षा
84	जिस्म	–	शरीर/अंग
85	हैवान	–	दैत्य/असुर
86	रहम	–	दया
87	बेरहम	–	बेदर्द/दर्दनाक
88	खारिज	–	रद्द
89	इस्तीफा	–	त्यागपत्र
90	रोशनी	–	प्रकाश
91	मसीहा	–	देवदूत
92	पाक	–	पवित्र
93	कत्ल	–	हत्या
94	कातिल	–	हत्यारा
95	मुहैया	–	उपलब्ध
96	फीसदी	–	प्रतिशत
97	कायल	–	प्रशंसक
98	मुरीद	–	भक्त
99	कीमत	–	मूल्य (मुद्रा)
100	वक्त	–	समय
101	सुकून	–	शाँति
102	आराम	–	विश्राम
103	मशरूफ	–	व्यस्त
104	हसीन	–	सुंदर
105	कुदरत	–	प्रकृति
106	करिश्मा	–	चमत्कार
107	इजाद	–	आविष्कार
108	जरूरत	–	आवश्यकता
109	जरूर	–	अवश्य

चीन में चीनी, जापान में जापानी ब्रिटेन में अंग्रेजी, पाकिस्तान में उर्दू तो हिंदुस्तान में हिन्दी क्यों नहीं ?

'हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है, आइये इसका सम्मान करें।'

- व्हाट्सएप्प पर प्रसारित सन्देश

हिन्दी प्रेमी पाठकों एवं आर्यजनों से निवेदन है कि इसे काटकर अपने कार्यालय में लगवाएं और अपने मित्रों, परिचितों और अन्य महानुभावों को सोशल मीडिया फेसबुक, टेलिग्राम, ट्वीटर, व्हाट्सप्प आदि के माध्यम से बार-बार पहुंचाएं - विनय आर्य, महामन्त्री

आर्यजगत के वरिष्ठ संन्यासी, अनेक गुरुकुलों के प्रणेता एवं संस्थापक स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती का अमृत महोत्सव

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सभा प्रधान एवं महामन्त्री जी ने शॉल ओढ़ाकर लिया आशीर्वाद

आर्य जगत के वरिष्ठ मूर्धन्य संन्यासी, अनेक गुरुकुलों संस्थापक एवं संचालक, स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती जी का 75वां जन्मोत्सव समूचे आर्य जगत ने अमृत महोत्सव के रूप में धूमधाम से मनाया। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने स्वामी जी को शाल एवं पुष्पगुच्छ भेंट कर आशीर्वाद लेते हुए बधाई एवं शुभकामनाएं दी। प्रधान जी ने स्वामी जी के जन्मदिन पर अपने उद्बोधन में कहा कि अनेकानेक विद्वानों का निर्माण करने वाले, देश-विदेश में वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों

के प्रचार-प्रसार को गति प्रदान करने वाले महान तपस्वी स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज की आर्यसमाज को अद्‌भुत देन है। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि स्वामी जी का कुशल निर्देशन प्रेरणा और आशीर्वाद हमें इसी तरह निरन्तर प्राप्त होता रहे। इस अवसर पर दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य, द. दिल्ली वेद प्रचार मंडल के प्रधान ओम प्रकाश यजुर्वेदी, पूर्वी दिल्ली वेद प्रचार मंडल के प्रधान श्री अशोक गुप्ता, आर्य केन्द्रीय सभा के मन्त्री श्री हरिओम बंसल, श्री एस.पी. सिंह, आर्यसमाज नरेला के अधिकारीगण भी उपस्थित रहे।

बैंकिंग सेवा से निवृत्त होने पर आर्यसमाज रानी बाग में हुआ

श्री जोगेन्द्र खट्टर जी का सपरिवार स्वागत

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के महामन्त्री श्री जोगेन्द्र आर्य (खट्टर) जी बैंक सेवा से निवृत्त होने पर आर्यसमाज रानी बाग में सपरिवार स्वागत किया गया। ज्ञातव्य है कि श्री आर्य जी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तरंग सदस्य, वेद प्रचार मंडल उत्तर पश्चिम दिल्ली के महामन्त्री, आर्यसमाज रानी बाग के मन्त्री, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली में मन्त्री एवं दिल्ली सभा के माननीय विशेष आमन्त्रित सदस्य के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। उनकी सेवानिवृति से आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार को और गति मिलेगी। उनके सेवानिवृत्ति समारोह के अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, महामन्त्री विनय आर्य, आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री श्री सतीश आर्य, दिल्ली सभा के उप प्रधान श्री अरुण प्रकाश, मन्त्री श्री सुखबीर सिंह आर्य, वेद प्रचार मंडल उ. पश्चिम दिल्ली के प्रधान श्री सुरेन्द्र आर्य, अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के कोषाध्यक्ष श्री योगेश आर्य जी ने भी पहुंचकर उन्हें शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर उनकी माताजी, धर्मली एवं सुपुत्र भी उपस्थिति रहे।

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के अन्तर्गत थांदला शाखा में महामारी निवारण यज्ञ सम्पन्न

थांदला तहसील के अन्तर्गत भामल में 18 जुलाई 2021 सुबह 9 बजे से विश्व में फैली भयानक रोग से मुक्ति हेतु महामारी निवारण महायज्ञ एवं निशुल्क काढ़ा वितरण का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम महर्षि दयानंद सेवाश्रम थादंला एवं महाशय धर्मपाल एम.डी. एच. दयानंद विद्या निकेतन भामल के सहयोग एवं आचार्य विश्वामित्र योगाचार्य के कुशल नेतृत्व में व आचार्य दयासागर जी के प्रेरणा व मार्गदर्शन से किया गया। आचार्य विश्वामित्र जी ने कहा कि यज्ञ हमारे

स्वास्थ्य का अभिन्न अंग है क्योंकि एक बूंद देसी गाय के घी से 10 हजार कैलोरी ऑक्सीजन की प्राप्ति होती है। यदि देसी आयुर्वेदिक जड़ी बूटियों के द्वारा यदि हवन किया जाए तो करोना, ब्लैक फंगस जैसे अनेक महामारी बीमारियों से बचा जा सकता है। अंत में दयानंद विद्या निकेतन भामल के प्रधानाचार्य श्री संजय शास्त्री जी ने दूर सुदूर से पध ारे हुए यजमान एवं विद्वानों का आभार व्यक्त करके धन्यवाद ज्ञापन किया। यह कार्यक्रम 12 दिनों तक नियमित रूप से संचालित किया गया।

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ की पूर्वोत्तर शाखाओं में आर्यसमाज की ओर से राशन वितरण

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा ईकाई अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ, नई दिल्ली के तत्वावधान में पूर्वोत्तर राज्यों के नागालैंड एवं असम क्षेत्र में खाद्यान्न का गरीब एवं आदिवासी परिवारों को वितरण किया गया। इसके अन्तर्गत रानी गाइडिन्लयू वैदिक गुरुकुलम, अजाईलांग पेरेन (नागालैंड) एवं महाशय धर्मपाल आर्य विद्या निकेतन धनश्री, कार्बी आंग्लांग (असम) में संघ की ओर से सूखा राशन की किट क्षेत्रीय गरीब एवं आदिवासी परिवारों तथा विद्यालय में अध्ययन कर रहे गरीब बच्चों को प्रदान किया गया। राशन/खाद्यान्न सामग्री का वितरण आश्रम के संचालक आचार्य अमित कुमार शास्त्री जी एवं स्थानीय प्रबुद्धजनों द्वारा कराया गया।

Makers of the Arya Samaj : Maharishi Dayanand Saraswati

Continue From Last issue

As soon as the guru ceased to beat him, Swami Dayanand began to press his hands. He then said in a most humble manner, "Most reverend guru, I hope this has not hurt your hands. My body has been hardened by years of penance, and I am sure you must have felt it very irksome to beat me. If! ever offend you again and you want to punish me, you should not do it yourself. Ask somebody else to do it for you and your hands will not smart so with the pain."

It is not known what Swami Virjanand said at that time, but he must have been touched by these words. It is said that Swami Dayanand bore the scars of this punishment to the last day of his life. He very often pointed to them withpride and said, "It was my capacity to bear pain like this that endeared me to my teacher."

Swami Dayanand lived at Mathura for about two years and a half. During this time he did his best to please his guru. He did so by his hard work, his capacity for service and his readiness to obey his teacher at all times. But now the time came when he had to leave, for he had finished his studies. But before he did so, he had to present some offering to his guru. That is known as Guru Dakhshina, and is a very ancient custom.

It should be remembered that in days gone by there were no schools and colleges in India, as there are at present. Students read at pathshalas where they paid no fees. But as soon as a student completed his studies, he had to take some kind of offering to his guru. It was often a very paltry thing. It was valued not on account of its price, but because it was a token of the giver's sincere gratitude and loving devotion.

Swami Dayanand had no money. It was not possible for him to buy any expensive gift for his guru. So he purchased a few cloves with the little money he had saved on his food and other things. With these he went to Swami Virjanand. Needless to say he felt very sad that day.

He took the humble offerings and presented them to the guru. The guru was sad at losing this obedient and intelligent pupil. He said to him, "I bless you with all my heart and pray to God to grant you a long life. May you live to do good to your country and mankind." Encouraged by these words Swami Dayanand presented him the offering, but the guru refused. "I do not want them," said he. "They are of no use to me."

.....This is the Guru Dakhshina that I demand of you. The world knows nothing about the Vedas, which are a treasure-house of divine knowledge; you must go all over the country and preach their message to the people. You know that India is full of darkness and ignorance; you must show its people the light of knowledge. The Hindus do not worship the one, true God, but innumerable gods and goddesses. Tell them how wrong it is. Toady Indians follow a large number of religions; you should persuade them to follow the religion preached in the Vedas. Try to abolish all evil customs and teach people the blessings of Brahmcharya or celibacy. The Aryans are in a very miserable plight. Go forth and reform them.....

Swami Dayanand felt puzzled at this and said, "What can I do, sir, to please you? I wish I could have brought something else. But, as you know, I am too poor; I could not afford anything else. Still I am at your service. I will do anything you want."

"I do not want the gift you have brought," said Swami Virjanand,

"but 1 want something else from you. It is something you already have and can part with very easily."

"I do not know what you mean, sir," said Swami Dayanand. "What else have I with me? Whatever I have is yours."

"If that is the case," said Swami Virjanand, "I want you to devote your life to the service of mankind. This is the *Guru Dakhshina* that I demand of you. The world knows nothing about the Vedas, which are a treasure-house of divine knowledge; you must go all over the country and preach their message to the people. You know that India is full of darkness and ignorance; you must show its people the light of knowledge. The Hindus do not worship the one, true God, but innumerable gods and goddesses. Tell them how wrong it is. Toady Indians follow a large number of religions; you should persuade them to follow the religion preached in the Vedas. Try to abolish all evil customs and teach people the blessings of Brahmcharya or celibacy. The Aryans are in a very miserable plight. Go forth and reform them. This is the service I desire from you. You should realize that other gifts cannot please me in any way."

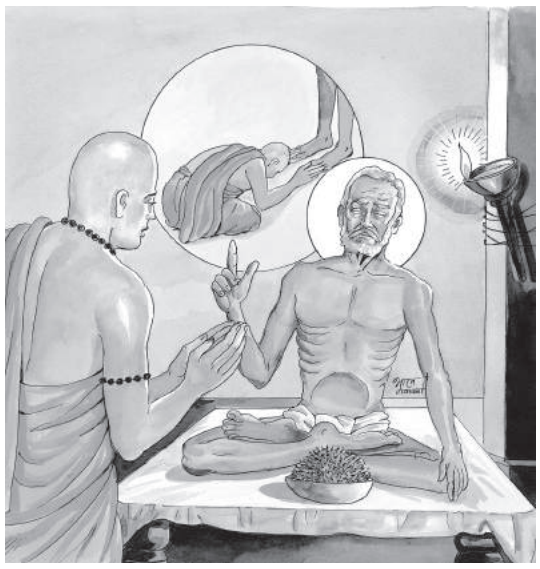

"I will gladly do as you wish, sir," said Swami Dayanand. "But it is not as easy as you think," said Swami Virjanand. "If you want to do these things you must learn to live for others and not for yourself. You must be ready to face troubles and disappointments, sorrows and failures. You must promise me that you will never deviate from your path."

"It shall be as you wish," said Swami Dayanand. "I will dedicate my whole life to theservice of mankind. Please give me your blessing so that I may succeed in.my mission. 1 cannot thank you enough for all that you have done for me. You have really made a man of me."

"God be with you," said Swami Virjanand. And so the guru and the pupil parted.

To be continued.....

With thanks By: "Makers of Arya Samaj"

संस्कृत वाक्य प्रबोध

रोगप्रकरणम्

गतांक से आगे - संस्कृत	हिन्दी
335. अस्य कीदृशो रोगो वर्त्तते?	इसको किस प्रकार का रोग है?
336. जीर्णज्वरोऽस्ति।	जीर्णज्वर है।
337. औषधं देहि।	औषध दे।
338. ददामि।	देता हूं।
339. परन्तु पथ्यं सदा कर्त्तव्यम्। न हि पथ्येन विना रोगो निवर्त्तते।	परन्तु पथ्य सदा करना चाहिये। पथ्य के विना रोग निवृत्त नहीं होता।
340. अयं कुपथ्यकारित्वात् सदा रुग्णो वर्त्तते।	यह कुपथ्यकारी होने से सदा रोगी रहता है।
341. अस्य पित्तकोपो वर्त्तते।	इसको पित्त का कोप है।
342. मम कफो वर्धत औषधं देहि।	मेरे को कफ बढ़ता जाता है औषध दीजिए।
343. निदानं कृत्वा दास्यामि।	रोग की परीक्षा करके दूंगा।
344. अस्य महान् कासश्वासोऽस्ति।	इसको बड़ा कासक्वास अर्थात् दमा है।
345. मम शरीरे तु वातव्याधिर्वर्त्तते।	मेरे शरीर में तो वातव्याधि है।
346. संग्रहणी निवृत्ता न वा?	संग्रहणी छूटी वा नहीं?
347. अद्यपर्यन्तं तु न निवृत्ता।	आज तक तो नहीं छूटी।
348. औषधं संसेव्य पथ्यं करोषि न वा?	औषधि का सेवन करके पथ्य करते हो वा नहीं?
349. क्रियते परन्तु सुवैद्यो न मिलति कश्चिद्यः सम्यक् परीक्ष्यौषधं दद्यात्।	करता तो हूं परन्तु अच्छा वैद्य कोई नहीं मिलता कि जो अच्छे प्रकार परीक्षा करके औषध देवे।
350. तृषऽस्ति चेज्जलं पिब।	प्यास हो तो जल पी।

क्रमशः - साभार :- संस्कृत वाक्य प्रबोध (प्रकाशित-दिल्ली संस्कृत अकादमी)

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा
समस्त विद्यालयों/आर्य शिक्षण संस्थाओं हेतु प्रकाशित

नैतिक शिक्षा की पुस्तकें

नर्सरी से 12वीं कक्षा तक

आकर्षक छूट 25%

बेहतरीन कागज पर आकर्षक छपाई में तैयार कराई गई नैतिक शिक्षा की पुस्तकें छात्रों के नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक ज्ञान तथा राष्ट्रीय भावना जागृत करने वाली हैं। ये पुस्तकें दिल्ली के समस्त विद्यालयों/शिक्षण संस्थाओं के साथ-साथ दिल्ली से बाहर अन्य प्रदेशों के विद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी नर्सरी से कक्षा 12वीं तक लागू हैं। अपने विद्यालय/शिक्षण संस्था के लिए आवश्यकतानुसार मंगवाने के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001
☎ : 23360150, 9540040339; Email : aryasabha@yahoo.com

प्रथम पृष्ठ का शेष

श्रावणी पर्व : कोविड नियमों का .....

से-आगे बढ़ते चले जाते हैं। क्योंकि पर्व में अंतर्निहित प्रेरणा मनुष्य को नई शक्ति, नया उत्साह और नया विचार देकर उसे आगे बढ़ने, ऊंचा उठने के लिए प्रेरित करती हैं। आर्य जाति सदा से ही पर्व प्रिय रही है। पर्वो की वृहद श्रंखला में एक श्रावणी पर्व का अवसर हमारे सामने है। इस पर्व में वेदों के पढ़ने-पढ़ाने और सुनने-सुनाने का विशेष महत्व माना गया है। अपने वैदिक ज्ञान-विज्ञान को पढ़ने, सुनने, सोचने, समझने और उस पर गहराई से चिंतन-मनन कर अपनाने से ही मनुष्य जीवन ऊंचाई प्राप्त करता है।

स्वाध्याय का लें-संकल्प

वैदिक धर्म में प्रत्येक वर्ण और आश्रमों के मनुष्यों के लिए वेदादि शास्त्रों का स्वाध्याय अनिवार्य माना गया है। ब्राह्मण वर्ण और ब्रह्मचर्य आश्रम की तो नींव ही स्वाध्याय पर टिकी है अर्थात् विद्यार्थियों को और ब्राह्मण, पुरोहित-आचार्यो को विशेष रूप से स्वाध्याय शील होना ही चाहिए। क्षत्रिय वर्ग अर्थात् सैन्य बल तथा सेना के उच्च अधिकारी लोग स्वाध्यायशील होंगे तो सुरक्षा और अनुशासन की व्यवस्था उचित होगी। इसी तरह व्यापारी वर्ग को भी स्वाध्याय का विशेष लाभ यह होता है कि उनमें सात्विकता का समावेश रहेगा। शुद्रों को भी अपने उत्थान के लिए स्वाध्याय करना ही चाहिए। अधिकांशतया एक उम्र तक कुछ विशेष जानने की और सीखने की जिज्ञासा मनुष्य के भीतर दिखाई देती है, उसके बाद मनुष्य को आलस्य घेर लेता है और व्यक्ति पढ़ना-पढ़ाना बंद कर देता है। अगर कोई उसे स्वाध्याय के लिए प्रेरित भी करे तो वह यही कहता है कि अब पढ़कर क्या करना? क्या करेंगे पढ़-लिखकर, बहुत पढ़ लिया, बस अब और नहीं। लेकिन श्रावणी पर्व प्रेरित करता है कि जीवन में नवीनता बनाए रखने के लिए निरंतर स्वाध्याय अति आवश्यक है। जब तक आप सीखते रहते हैं तब तक आपके जीवन में नयापन बना रहता है। समुद्र के किनारे पर जो रेत का अंबार होता है उसमें से एक कण के बराबर भी मनुष्य पूरे जीवन में नहीं जान पाता और हमारी ज्ञान संपदा कितनी है, जितना कि समुद्र के किनारे रेत का भंडार। इसलिए श्रावणी पर्व पर संकल्प करें कि हम प्रतिदिन नियमपूर्वक आर्ष ग्रंथों का स्वाध्याय करेंगे। नित निरंतर कुछ-न-कुछ नया और उपयोगी ज्ञान धारण कर अपने जीवन को गरिमा प्रदान करते रहेंगे।

स्वाध्याय की महिमा

शरीर की उन्नति, प्रगति का आधार जैसे अन्न को माना गया है, वैसे ही मन की विशालता और महानता आधार स्वाध्याय है। प्राचीन काल में तो स्वाभाविक रूप से ही लोग वेदादि शास्त्रों का स्वाध्याय प्रतिदिन करते थे, किंतु वर्षा ऋतु में वेदपाठ, धर्मोपदेश और ज्ञान चर्चाओं का विशेष आयोजन किया जाता था। श्रावणी पर्व पर या नियमित वेद पढ़ने का मतलब है कि आप ईश्वरीय आज्ञाओं को जान रहे है और वेदों पर आधारित ऋषि मुनियों के द्वारा निर्मित ग्रंथों के पढ़ने का सीधा अर्थ है कि आप युग युगांतरों के ऋषियों के अनुभूत विचारों को आत्मसात कर रहे हैं।

इसलिए आर्य समाजों में यज्ञोपरांत वैदिक प्रार्थना का गान किया जाता है-

सब वेद पढ़ें, सुविचार बढ़ें,
बल पायें चढ़ें, नित ऊपर को।
अविरुद्ध रहे, ऋजुपंथ गहें,
परिवार कहे, वसुधा भर को।।
दिन फेर पिता वर दे सविता,
हम आर्य करें निज जीवन को।
दिन फेर पिता वर दे सविता,
हम आर्य करें भूमंडल को।।

प्रेरक प्रसंग

एक आपबीती

मैं स्कूल का अध्यापक था। मेरे लेखों तथा समाजिक गतिविधियों के कारण आर्यजगत् के बहुत लोग मुझे जानते थे। हिन्दी सत्याग्रह के पश्चात् मैं स्कूल छोड़कर दयानन्द कॉलेज हिसार की एम.ए. कक्षा में प्रविष्ट हो गया। कॉलेज के प्राचार्य थे प्रिं. ज्ञानचन्द्रजी (स्वामी मुनीश्वरानन्दजी) हिसारवाले।

वे यदा-कदा मुझे व्याख्यान तथा प्रचार के लिए भी, कभी कहीं जाने को कह देते। कॉलेज में प्रविष्ट हुए एक-दो सप्ताह ही बीते कि उन्होंने आर्यसमाज, माडल टाउन के साप्ताहिक सत्संग में मेरा व्याख्यान रख दिया। वे स्वयं माडल टाउन में ही रहते थे। व्याख्यान से वे प्रभावित हुए। सत्संग के पश्चात् मुझे अपने घर पर भोजन करने को कहा। मैं उनके साथ चला गया।

वे स्वयं मुझे भोजन करवाने लगे। मैंने कहा कि आप भी बैठिए। मेरे बहुत कहने पर भी मेरे प्रिंसिपल साहब न माने। घर पर सेवक भी था। उसे भी भोजन न लाने दिया। स्वयं ही परोसने लगे। मुझे प्रतिष्ठित अतिथि बनाकर एक ओर बैठकर आर्यसमाज विषयक चर्चाएँ करते रहे। यह दृश्य मुझे कभी भूलता नहीं।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

प्रथम पृष्ठ का शेष

25वां आर्य परिवार विवाह...

प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित आर्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन के सार्थक परिणाम सामने आ रहे हैं। इसके लिए सभी आयोजकों को बहुत-बहुत बधाई। ये सम्मेलन हजारों युवक-युवतियों को सुखमय दाम्पत्य जीवन प्रदान कर रहे हैं। समाज में प्रचलित जाति के बंधन अपने आपमें एक कुरीति है। जिसके निवारण के लिए आर्य समाज संकल्पित है। महर्षि दयानंद सरस्वती जी के अनुसार युवक-युवतियों को परस्पर गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार ही जीवन साथी चुनना चाहिए। सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने अपने सन्देश में कहा कि 2010-11 में प्रारंभ हुए आर्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन से लेकर आज यह 25वां सम्मेलन आयोजित हो रहा है। जिसमें कोरोना की गाइडलाईन को अपनाते हुए डॉ., इंजीनियर, सीए, एम.ए, एमटेक, बीटेक, बीएड आदि की डिग्री प्राप्त और अनेक सफल व्यवसाय करने वाले युवक-युवतियों का भाग लेना अपने आपमें अनुपम है। सभी को दिल्ली सभा की ओर से उन्नति, प्रगति और सफलता के लिए शुभकामनाएं देते हैं। सम्मेलन के सहसंयोजक आर्य सतीश चढ्ढा ने कार्यक्रम की सफलता के लिए सभी कार्यकर्त्ताओं और अधिकारियों का धन्यवाद करते हुए कहा कि इस तरह के आयोजन परिवार, समाज, देश और दुनिया के लिए अत्यंत प्रेरणादायी हैं। आर्य समाज की विचारधारा और वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए आज की युवा पीढ़ी को हमें अग्रसर करना ही होगा। तभी हम "कृण्वन्तो विश्वमार्यम" का साकार रूप देखेंगे। राष्ट्रीय संयोजक श्री अर्जुन देव चढ्ढा जी ने सम्मेलन की सार्थकता का प्रमाण देते हुए कहा कि अब तक दिल्ली, इन्दौर, आनंद रोजड़, गुजरात, जम्मू, देहरादुन आदि स्थानों पर आर्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन आयोजित किए गए है। जिनके माध्यम से अनेक आर्य परिवारों में खुशी का वातावरण बना है।

श्रीमती वीना आर्या व विभा आर्या ने बताया की युवतियों में से कुछ ने अपने प्रदेश में जीवनसाथी ,कुछ ने सरकारी नौकरी, व्यवसाय वाला, कुछ ने उच्च शिक्षा प्राप्त तो कुछ ने छोटा परिवार चाहने की बात कही। इसी प्रकार रश्मि वर्मा व डॉ प्रतिभा नंदन बताया कि युवकों ने स्लिम युवती अपने कद अनुसार, नौकरी पेशा, घरेलू व्यवहार कुशल व संस्कारित शिक्षित युवती को जीवनसाथी बनाने की बात कही।

-आर्य सतीश चढ्ढा, सहसंयोजक

शोक समाचार

श्री राम सिंह शर्मा जी का निधन

आर्यसमाज के वरिष्ठ समर्पित कार्यकर्ता, शामली निवासी श्री रामसिंह शर्मा का 92 वर्ष की आयु में 20 जुलाई, 2021 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ सम्पन्न हुआ। वे आर्यसमाज सदर बाजार के मंत्री, बाद में आर्यसमाज रामाकृष्णापुरम, किदवई नगर (पूर्वी) के प्रधान भी रहे। आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली, आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली व सार्वदेशिक सभा से जुड़े रहे । दिल्ली में सम्पन्न होने वाले सभी सम्मेलनों व महासम्मेलनों में आप सहभागी होते थे।

श्री राजेन्द्र शर्मा जी का निधन

श्री महर्षि दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय टंकारा के यशस्वी वक्ता एवं पुरोहित श्री राजेन्द्र शर्मा जी का दिनांक 22 जुलाई, 2021 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया।

श्री नरेन्द्र गुप्ता जी का निधन

आर्यसमाज शक्ति नगर, दिल्ली के प्रधान श्री नरेन्द्र गुप्ता जी का दिनांक 29 अप्रैल, 2021को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा ऑनलाइन रूप से सम्पन्न हुई।

आचार्य अभयदेव शास्त्री जी को मातृशोक

आर्य पुरोहित सभा के अध्यक्ष आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी की बहन एवं आर्यसमाज गुजरावाला टाउन के धर्माचार्य श्री अभयदेव शास्त्री जी की पूज्यामाता श्रीमती सोनदेवी जी का दिनांक 3 अगस्त, 2021 को 82 वर्ष की आयु में बेगमपुर दिल्ली में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार उनके पैत्रक गांव नंगला शंकर, सिकन्दराराऊ हाथरस (उ.प्र.) में पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 14 अगस्त 2021 को उनके पैतृक गांव में ही आयोजित की जाएगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 2 अगस्त, 2021 से रविवार 8 अगस्त, 2021

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2021-22-2023

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 05-06/08/2021 (गुरु-शुक्रवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-23

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 04 अगस्त, 2021

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजनाओं के लिए सहयोग/दान अब और भी आसान: QR कोड स्कैन करते ही होगा भुगतान

आपको जानकर हर्ष होगा कि बैंक द्वारा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को डिजिटल पेमेंट हेतु कोड़ जारी किया गया है। अब आप किसी भी पेमेंट माध्यम - पेटीएम, फोन पे, गूगल पे, मास्टर/वीजा रुपये, भीम पे - से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित किसी भी योजना/प्रकल्प के लिए सहयोग एवं दान राशि का भुगतान केवल मात्र क्यू.आर. कोड को स्कैन करके कभी भी-कहीं से भी कर सकते हैं।

आप इस कोड के माध्यम अपने आर्यसमाज की ओर से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को देय दशांश एवं वेद प्रचार राशियों का भी भुगतान कर सकते हैं।

आप द्वारा इसके माध्यम से भेजी गई राशि तत्काल सभा को प्राप्त हो जाएगी। कृपया भुगतान करते ही आपके पास जो मैसेज आए उसका स्क्रीन शॉट लेकर अथवा सीधे उस मैसेज को 9540040388 पर व्हाट्एप्प अथवा टेलिग्राम कर दें, जिससे आपको तुरन्त रसीद जारी की जा सके।

- विनय आर्य, महामन्त्री
(9958174441)

जरूरतमन्द छात्राओं को बैग एवं शिक्षण सामग्री वितरित

प्रतिष्ठा में,

स्व. श्री छोटू सिहं आर्य जी के स्वर्ण जयन्ती वर्ष के अवसर पर आर्य कन्या विद्यालय समिति द्वारा बैंक ऑफ बड़ौदा के 114वें स्थापना दिवस पर उनके सहयोग से जरूरतमंद छात्राओं को बैग एवं शिक्षण सामग्री मुख्य अतिथि श्री राजेश कुमार शर्मा रीजनल मैनेजर, विनोद बोहरा डी. आर.एम, सी. के शर्मा, मुख्य प्रबन्धक, बैंक आफ बड़ौदा, आर्य कन्या विद्यालय समिति के प्रधान श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता, अशोक कुमार आर्य, प्रदीप आर्य, इंजी सुरेश कुमार दरगन, कमला शर्मा, प्रद्युम्न कुमार गर्ग के द्वारा वितरित किए गए।

पृष्ठ 2 का शेष

करने वालों के पास अंग्रेजी में टाइप करने भर का ज्ञान, मोबाइल, लैपटॉप या ऐसी को डिवाइस और इंटरनेट डेटा होगा। इसलिए मूलनिवासी जैसे गैंग के सरगना लोग ऐसा कर रहे होंगे वरना एक आम भारतीय तो राष्ट्रीय गर्व का जश्न मनाता है।

इन पोस्टों से हमें एहसास हुआ कि जिसके पास जैसा चश्मा है, वह वैसा भारत देख रहा है और जिसके पास जिस रंग की स्याही है, वह वैसा ही भारत लिख रहा है। इसमें थ्योरी है, कई सिद्धान्त हैं। कोई भी किसी को भी बाहरी और खुद को मूलनिवासी कह सकता है। जातीय बैंड बजाने का यह चलन खूब बढ़ता चला जा रहा है। एक ओर जातीय गर्व है, दूसरी ओर जातीय अपशब्द है। एक तरफ जाति का अहंकार है, दूसरी तरफ शर्मिंदगी है।

लोगों की रगों में यह सब इस कदर भरा हुआ है कि पूरा रक्त निचोड़ लो तो भी एक दो तोला बच ही जायेगा। पर करें भी क्या, सभी जातिवाद में लिप्त हैं और सभी इससे छुटकारा चाह रहे हैं। यही कारण है कि चाइना पहले नम्बर है और भारत 90 वें स्थान से नीचे खड़ा दिखाई दे रहा है। कारण यहाँ लोग खेल की भावना, खिलाडी की शैली, उनका खेलने का ढंग, उनका परिश्रम और उनका मेहनत जमीन से उठकर आसमान छूने का जज्बा देखने के बजाय गूगल पर ढूंढ रहे हैं कि पी वी सिन्धु कास्ट। अब जिन्हें पी वी सिन्धु की सच में कास्ट जाननी है तो हम बता दें उसकी जाति बेडमिन्टन है। उसका देश भारत है। तिरंगा उसकी शान है और ये मैडल ही उसकी असली पहचान हैं। - ***सम्पादक***

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह